CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 19th June 2020, Revised on 26th June 2020, Accepted 29th June 2020

शोध पत्र

संत दादू दयाल के विचारों के आधुनिक निहितार्थ

* डॉ. रोहिताश कुमार
प्राचार्य, बालाजी टी.टी कॉलेज
गुढ़ा गौड़जी, जिला झुन्झुनूं, राजस्थान
Email-rohitashmahla@gmail.com, Mob-9983403798

मुख्य शब्द : भारतीय दर्शन, *संत दादू दयाल, चित, मन, बुद्धि आदि.*

प्रस्तावना

भारत में प्राचीनकाल से ही अनेक विचारक पैदा होते रहे है। मध्यकाल में संत दादू दयाल ने धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, नैतिक आदि सभी प्रकार के विचार प्रस्तुत किये। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। वर्तमान भारत में धार्मिक व सामाजिक स्तर पर अनेक चुनौतिया है। संत दादू दयाल ने इन चुनौतियों का सामना करने की रूपरेखा 16 वीं शताब्दी में ही प्रस्तुत कर दी थी। विगत कुछ वर्षों में भारत की परम्परागत शिक्षा प्रणाली ध्वस्त हो गई है। इसका स्थान लार्ड मैकालें द्वारा परिकल्पित व ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा प्रारंभ की गई प्रणाली ने ले रखा है। ऐसे समय में ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो सुधारवादी व प्रगतिशीलता से सामंजस्य स्थापित करे एवं भारतीयता को पुनः जीवित करने में समर्थ हों।

भारतीय दर्शन की महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं का साकार रूप संत दादू दयाल द्वारा वर्णित ग्रन्थों में व्यावहारिक रूप में देखा जा सकता है। भोगवाद एवं भौतिकतावाद से ग्रसित शिक्षक व्यक्ति का दादू दयाल की शिक्षाओं द्वारा मार्ग दिखाकर मानव कल्याण किया जा सकता है। दादू दयाल द्वारा वर्णित विचारों से जो बातें सामने आती है वे स्पष्ट समझ रखी जाए तो व्यक्ति उस ज्ञान को प्राप्त कर अपने जीवन का विकास कर सकता है।

अध्ययन का औचित्य

आधुनिक काल में शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी, अभिभावक, पाठ्यक्रम आदि सभी का स्वरूप बदल गया है आज देश में अशांति व भय का वातावरण निर्मित हो रहा है। उक्त वातावरण में वर्तमान मानव भौतिकवाद से नहीं बच सकता, चाहें वह मानव जाति के कल्याण की कितनी ही बाते क्यों न कर लें। आज हम विकास की सही दिशा से विमुख है क्योंकि मनुष्य ने अपने अन्दर जितना पाशविक वृतियों का विकास कर रखा है उतना ही अन्दर से देवत्व का हनन भी हो गया है। अतः जिस समाज में हम रहते हैं, उसे सही मार्ग दिखाना हमारा परम कर्त्तव्य है। इसी कर्त्तव्य का पालन करने हेतु शौध विषय का चयन किया गया । दादू दयाल के विचारों की दृष्टि से शैक्षिक मूल्य आधारित अनुसंधान आज तक नहीं हुआ है। दादू दयाल के शैक्षिक विचारों के व्यावहारिक पक्ष को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना शौधकर्ता का मुख्य ध्येय है।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या

(अ) **संत**

संत शब्द का प्रयोग प्राचीन साहित्य में परोपकारी, सज्जन, विवकेशील व्यक्ति आदि अनेक अर्थों में मिलता है। संत शब्द के बताये गये सभी अर्थ सद्गुण, सदाचार तथा एक विशेष प्रकार की अनुभूति से समन्वित जीवन दृष्टि के सूचक है और वे सभी प्रसिद्ध संतों पर घटित होते हैं।

(ब) **विचार**

विचार के अन्तर्गत वे सभी कार्य शामिल होते है जिनका संबंध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में शिक्षा से होता है, शिक्षक व शिक्षार्थियों के विकास में योगदान देने वाले सभी कारकों का अध्ययन विचारों के अन्दर किया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. संत दादू दयाल के नैतिक विचारों की आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन करना ।
2. संत दादू दयाल द्वारा वर्णित शिक्षक – शिक्षार्थी के संबंधों की आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन करना ।
3. संत दादू दयाल के शैक्षिक विचारों की आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन करना ।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध में तथ्यों का संग्रह कर विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में विषय–वस्तु से संबंधित तथ्यों एवं सूचनाओं का चयन संत दादू दयाल से संबंधित है संदर्भ पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, संस्मरणों आदि में लिखित विवरणों का विश्लेषण करने के पश्चात किया गया है। शोध प्रक्रिया की दृष्टि से दार्शनिक एवं विवेचनात्मक विषयों पर किये जाने वाले अध्ययन में यह विधि सर्वथा उपयुक्त एवं तर्कसंगत मानी जाती है। शोध प्रकृति के अनुसार अध्यायों के शीर्षक अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर निर्मित किये गये हैं और उन से संबंधित सम्प्रत्यय एवं तथ्यो का संग्रह किया गया है।

परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन में केवल समस्या से संबन्धित विचारों और सम्प्रत्ययों को दादू दयाल के ग्रन्थों से संकलित किया गया है इस अध्ययन में किसी भी प्रकार के सांख्यिकीय गणना विधि का प्रयोग नहीं किया गया है।

1. संत दादू दयाल के नैतिक विचारों की आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

- दादू वाणी नैतिक गुणों का खजाना है। वर्तमान मानव स्वार्थी हो गया है अपने स्वार्थ के लिए मनुष्य चरित्र को दाव पर रख देता है। चरित्र का नाश हो जाने पर उसे पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता । आधुनिक मानव को दादू के नैतिक विचारों का अनुसरण करते हुये अपने चरित्र की रक्षा करनी चाहिए।
- नैतिकता के कारण भारत को विश्व गुरू की पदवी प्राप्त हुई थी। वर्तमान में पथभ्रष्ट हुये युवाओं को उक्त मार्ग का अनुसरण करके राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देना चाहिए।
- दादू के अनुसार नैतिक गुणों के कारण व्यक्ति विरोधी वस्तुओं एवं विचारों से घृणा तथा आदर्श वस्तुओं के प्रति जागरूक हो जाता है। एक बालक जो सत्य ईमानदारी तथा आज्ञापालन का महत्व दैनिक जीवन में समझता है तो वह निश्चित ही नैतिक गुणों का सम्मान करेगा।

2. संत दादू दयाल के शिक्षक – शिक्षार्थी के संबंधों की आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

- शिक्षकों को पहले जैसा सामाजिक सम्मान प्राप्त करने के लिए उन्हें विद्यालयों की चारदीवारी से निकलकर पुनः समाज से सम्पर्क स्थापित करना होगा और शिक्षण के साथ–साथ समाज सेवा के लिए समय निकालना होगा। शिक्षक और समाज के मध्य प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करने की दृष्टि से शिक्षक अभिभावक संघ बड़े प्रभावी साधन बन सकते हैं। इसलिए प्रत्येक विद्यालय में शिक्षक – अभिभावक संघ की स्थापना की जानी चाहिए।
- गुरू और शिष्यों के मध्य संबंध स्थापित किये बिना मानव निर्माण संभव नहीं है। शिष्यों को आदर्श मानव बनाने के लिए और शैक्षिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए गुरू शिष्य के मध्य प्रत्यक्ष एवं मधुर संबंध होने चाहिए।
- शिक्षा की दृष्टि से विद्यालयों के वातावरण को प्रभावी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक–शिष्य, शिक्षक–शिक्षक, शिक्षक–प्रधानाचार्य आदि के मध्य सद्भावनापूर्ण संबंध होने चाहिए।

3. संत दादू दयाल द्वारा वर्णित शैक्षिक विचारों की आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

- संबंधों पर बल
- अनुशासन पर बल
- मातृभाषा शिक्षण पर बल
- श्रम पर बल
- राष्ट्रीय एकता पर बल
- मानवीय मूल्यों का पोषण
- स्वावलम्बन की प्रेरणा

निश्कर्ष

आधुनिक काल में परिवर्तन की गति बहुत तीव्र है। प्रगति का अर्थ है परिवर्तन। परिवर्तन यदि सकारात्मक है तभी सराहनीय है। परिवर्तन हेतु सार्थक और तर्कसंगत प्रतिबलन संत दादू दयाल की शिक्षाओं द्वारा दिया जा सकता है। बदलतें युग में परम्परा जनित आवश्यकताओं के आधार पर स्थापित शिक्षा का शिक्षण प्रयाप्त नहीं है । हमें जीवन विरोधी तत्वों को नहीं पनपने देने के लिए एवं नवीन मूल्यों पर आधारित शिक्षा देकर समाज को प्रगति की ओर अग्रसर करने के लिए समय–समय पर दादू दयाल के संदेशों से शिक्षा प्राप्त कर आर्दश स्थापित करना चाहिए। संत दादू दयाल द्वारा वर्णित विचार हमारे अहंकार को नष्ट करके ऐसा आत्मविश्वास भरते हैं कि व्यक्ति शिक्षा का वास्तविक स्वरूप पहचान कर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता चला जाता है। वर्तमान समय में मानव के विकास में जो सबसे बड़ी बाधा है, वह है उसका अन्तर्द्वन्द्व, जिसने मनुष्य के हृदय को कुरूक्षेत्र में परिवर्तित कर दिया है। दादू दयाल द्वारा वर्णित विचार इस द्वन्द्व को दूर कर मानसिक शांति प्रदान करने का प्रयास करते है।

दादू दयाल द्वारा वर्णित विचारों के अनुसार ज्ञान कहीं बाहर से नहीं आता वह व्यक्ति के भीतर ही छुपा रहता है यदि मनुष्य के हृदय के आवरण को हटा दिया जाये तो मनुष्य को सब प्रकार का भौतिक तथा अभौतिक ज्ञान प्राप्त हो सकता है। ज्ञान की अनुभूति के लिए ध्यान को केन्द्रित करना अति आवश्यक है। मन के केन्द्रीयकरण द्वारा ही शिक्षा की प्राप्ति संभव है दादू दयाल द्वारा दी गई शिक्षा मनुष्य चिंतन व मनन पर बल देकर उसे प्ररेणा प्रदान करती है। हमें दादू दयाल की शिक्षा को आर्दश रूप में अपनाकर वर्तमान शिक्षा को राष्ट्र के लिए उपयोगी बनाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री स्वामी दादू दयाल की वाणी (1964) सम्पादक स्वामी चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी, वैदिक मंत्रालय, अजमेर।
2. चतुर्वेदी, पं. परशुराम(संवत 2058), हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास भाग 4, ना0प्र0सभा, वाराणसी।
3. श्री दादू दयाल जी की वाणी (सन 1991) :संपा0 श्री मंगलदास स्वामी, प्रकाशक श्री लक्ष्मीनारायण चिकित्सालय , जयपुर।
4. श्री दादू चरित्र चित्रावली (1998) : सम्पादक स्वामी कानीराम दादूपंथी, प्रकाशन श्रीराम सिंह श्रीचन्द दौलत राम गोयल दादू नगरी, हरियाणा।
5. द्विवेदी, हजारी प्रसाद (2001), हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. दादू दयाल (2009) राम वृक्ष, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
7. श्री दादू महाविद्यालय रजत जयन्ती ग्रन्थ (सन 2009) : श्री दादू महाविद्यालय, मोतीडूंगरी, जयपुर।

**** Corresponding Author***

डॉ. रोहिताश कुमार

प्राचार्य, बालाजी टी.टी कॉलेज

गुढ़ा गौड़जी, जिला झुन्झुनूं, राजस्थान

Email-rohitashmahla@gmail.com, Mob-9983403798